जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

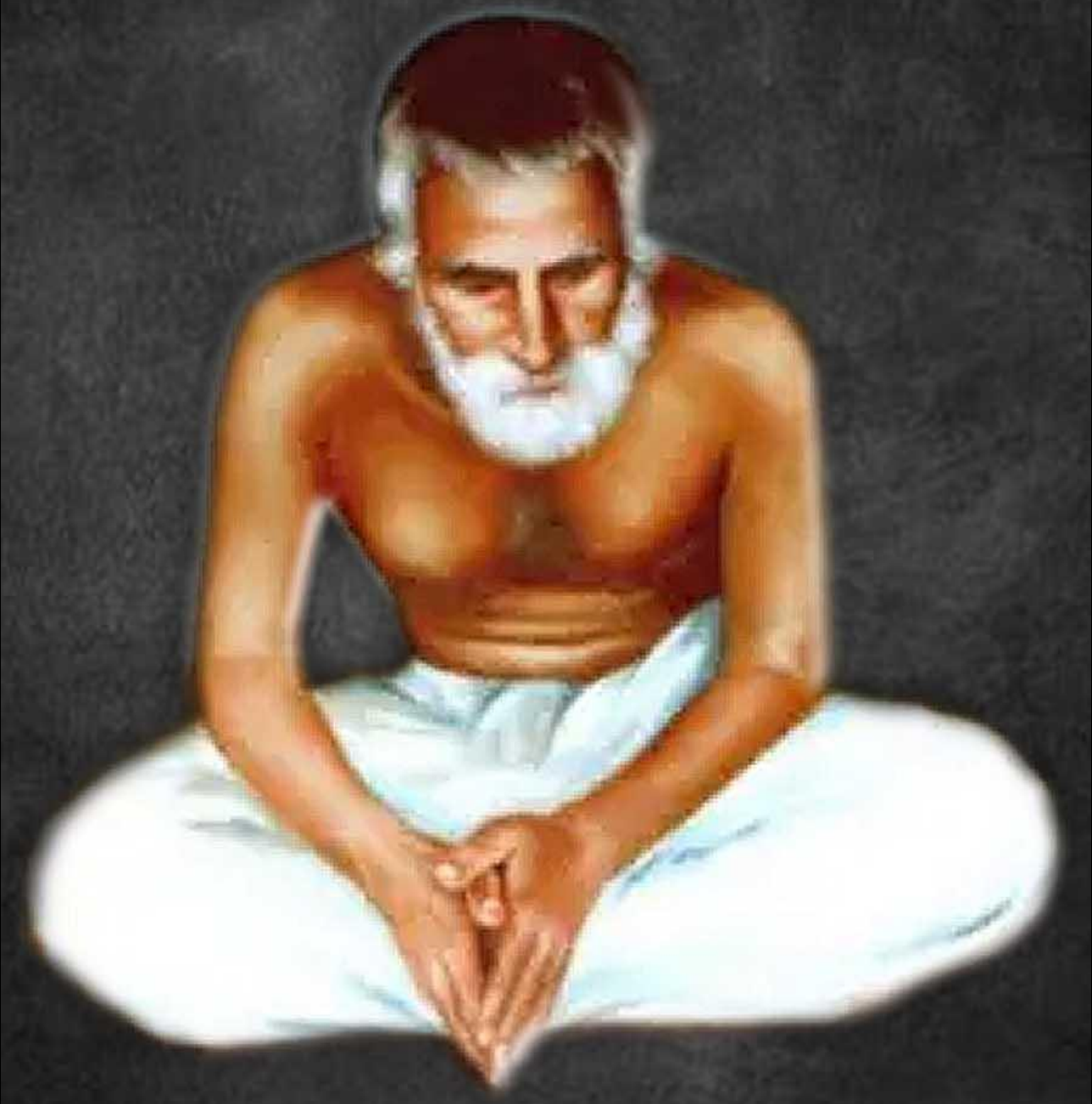

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

सद्गुरु - पदाश्रय में निष्ठा

श्रीलगुरुदेव

जागतिक सुनीति, पाण्डित्य आदि के बहुत ऊपर ऐकान्तिकी कृष्ण सेवा की अवस्थिति है। यही आदर्श प्रदर्शन करने के लिए श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज और श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद ने एक लीला प्रकाशित की।

नित्यसिद्ध, पवित्र - चरित्र, वृहद्व्रती और सर्वशास्त्रों के ज्ञाता

श्रील सरस्वती ठाकुर ने जब श्रील ठाकुर भक्तिविनोद के उपदेशानुसार श्रील गोरकिशोर दास बाबाजी महाराज से दीक्षा के लिए प्रार्थना की, तब प्रथम दिन श्रील गोरकिशोर दास बाबाजी महाराज ने श्रील सरस्वती ठाकुर से कहा, कहा, "मैं आपके ऊपर कृपा करूँ या नहीं, इस सम्बन्ध में महाप्रभु से पूछे बिना कुछ नहीं कह सकता।" दूसरे दिन श्रील सरस्वती ठाकुर जब श्रील बाबाजी महाराज के पास आए तो उन्होंने कहा — "मैं महाप्रभु से पूछना भूल गया।" श्रील सरस्वती ठाकुर ने विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हुए कहा, आपकी कृपा न पाकर में प्राण

त्याग दूँगा। तीसरे दिन जब श्रील सरस्वती ठाकुर श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के पास पहुँचे तो बाबाजी महाराज ने कहा, "मैंने महाप्रभु से पूछा था, लेकिन उन्होंने कहा सुनीति अथवा पाण्डित्य भगवद् भक्ति के सामने अति तुच्छ हैं।" यह सुनकर श्रील सरस्वती ठाकुर ने थोड़ा दुखी होकर कहा, आप कपट चूडामणि कृष्ण का भजन करते हैं इसलिए क्या मेरे साथ भी छल कर रहे हैं? आपके श्रीपादपद्म की कृपा यदि प्राप्त न हुई तो में प्राण त्याग दूँगा। गोष्ठीपूर्ण से 18 बार अस्वीकार होने के बाद भी श्रीरामानुजाचार्य जी ने बाद में

गोष्ठीपूर्ण जी की कृपा लाभ की थी। मैं भी उसी प्रकार आपके श्रीपादपद्मों की कृपा लाभ एक न एक दिन करूँगा ही करूँगा । यही मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है।" इससे श्रील बाबाजी महाराज ने श्रील सरस्वती ठाकुर से विशेष सन्तुष्ट होकर श्रील सरस्वती ठाकुर को अपने श्रीचरणों की धूलि से अभिषिक्त किया एवं उसी दिन ही गोद्रुम के स्वानन्द सुखदकुँज में उन्हें दीक्षा प्रदान की।

श्रीलगुरुदेव